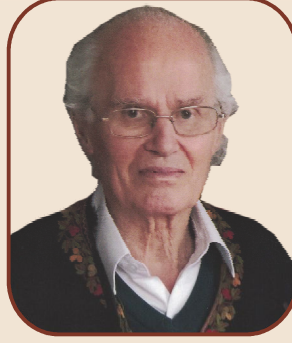


Padma Shri



PROF. PIERRE-SYLVAIN FILLIOZAT

Prof. Pierre-Sylvain Filliozat is a Professor of Sanskrit.

2. Born on the 15th February, 1936 at Neuilly s/Seine in France, Prof. Filliozat is the son of Shri Jean Filliozat (1906-1982), a reputed Professor of Indology in College of France, founder and director of the French Institute of Pondicherry. He obtained degrees in Sanskrit and Hindi (Paris) in 1959. He obtained his PhD (Paris) in 1962, with a thesis entitled *Le Prataparudriya de Vidyanatha* (Alamkara-shastra), a 13th century treatise of Sanskrit Poetics.

2. Prof. Filliozat worked in India from 1963 to 1967 as Member of Ecole frangaised'Extreme-Orient (French School of Asian Studies), in its Pondicherry branch. From 1967 to 2004 he has been Professor of Sanskrit in Ecole pratique des Hautes Etudes (School of Higher Studies), Sorbonne, Paris. Since 2004 in retirement, he is Emeritus Professor of Sanskrit, Paris.

3. Prof. Filliozat fulfilled missions to India every year (average of six months), at Pondicherry from 1955 to 1992 and at Mysore from 1993. During his stays in Pondicherry he was trained in Sanskrit by two traditional Sanskrit Pandits, N. Ramachandra Bhat and M. S. Narasimhacharya.

4. From 2000 Prof. Filliozat is a Member of Academie des inscriptions et belles-lettres (Institut de France, Paris). He was its President for one year in 2010. From 2000 to 2019, he has been Vice-President of the Societe Asiatique, Paris, 2000-2019. All along his career including the present day he has conducted research in the following areas of Sanskrit Studies: Sanskrit language and Indian grammatical tradition (Vyakarana), Sanskrit philology, paleography of Sanskrit manuscripts, Sanskrit epigraphy, Sanskrit poetical, religious, especially Shaivagamas, and scientific literatures and also on Indian religious architecture and iconography, with special reference to Karnataka monuments and the extraordinary site of Hampi and History of Indology. He has published 23 books and around 250 articles.

5. Prof. Filliozat has received many awards in India such as Mahamaho padhyaya Honoris causa (conferred by Lai Bahadur Shastri Sanskrit Vidyapeeth in 2013), Certificate of Honour for Sanskrit received from the President of India in 2014, Honorary Fellow of the Samvidya Institute for Cultural Studies (Pune), Vanamaii Samman for Sanskrit from Vanamali Trust, Mysore. In France he was awarded as Chevalier de la Legion d'Honneur; Chevalier de l'Ordre national du Merite; Commandeur de l'Ordre des Palmes academiques.

पद्म श्री



प्रो. प्येर्-सिल्वेन फिल्योज

प्रो. प्येर्-सिल्वेन फिल्योज संस्कृत के प्रोफेसर हैं।

- 15 फरवरी, 1936 को फ्रांस के न्यूली एस/सिएन में जन्मे प्रो. फिल्योज, कॉलेज ऑफ फ्रांस में इंडोलॉजी के एक प्रतिष्ठित प्रोफेसर, फ्रेंच इंस्टीट्यूट ऑफ पांडिचेरी के संस्थापक और निदेशक श्री जीन फिलिओजात (1906–1982) के पुत्र हैं। उन्होंने 1959 में संस्कृत और हिंदी (पेरिस) में डिग्री प्राप्त की। उन्होंने 1962 में 13वीं शताब्दी के संस्कृत ग्रंथ पर ली प्रतापरुद्रिय दि विद्यानाथ (अलंकार-शास्त्र), नामक शोध-पत्र के साथ अपनी पीएच.डी (पेरिस) की डिग्री हासिल की।
- प्रो. फिल्योज ने 1963 से 1967 तक भारत में इकोले फ्रैंजाइज्ड 'एक्सट्रीम-ओरिएंट (फ्रेंच स्कूल ऑफ एशियन स्टडीज), की पांडिचेरी शाखा में सदस्य के रूप में काम किया। 1967 से 2004 तक वह इकोले प्राटिक डेस हाउट्स एट्यूडस (स्कूल ऑफ हायर स्टडीज), सोरबोन, पेरिस में संस्कृत के प्रोफेसर रहे हैं। 2004 में सेवानिवृत्ति के बाद से, वह पेरिस में संस्कृत के एमेरिटस प्रोफेसर हैं।
- प्रो. फिल्योज ने 1955 से 1992 तक पांडिचेरी में और 1993 से मैसूर में हर वर्ष (औसतन छह महीने) भारत का अपना मिशन पूरा किया। पांडिचेरी के प्रवास के दौरान दो परंपरागत संस्कृत पंडितों, एन. रामचंद्र भट्ट और एम. एस. नरसिम्हाचार्य ने उन्हें संस्कृत में प्रशिक्षित किया।
- 2000 से प्रो. फिल्योज एकेडेमी डेस इंस्क्रिप्शन्स एट बेलेस-लेट्रेस (इंस्टीट्यूट डी फ्रांस, पेरिस) के सदस्य हैं। वह 2010 में एक वर्ष के लिए इसके अध्यक्ष थे। 2000 से 2019 तक, वह सोसाइटी एशियाटिक, पेरिस, के उपाध्यक्ष रहे। वर्तमान सहित अपने पूरे करियर में उन्होंने संस्कृत अध्ययन के निम्नलिखित क्षेत्रों में शोध किया है: संस्कृत भाषा और भारतीय व्याकरण परंपरा (व्याकरण), संस्कृत भाषाशास्त्र, संस्कृत पांडुलिपियों का अध्ययन, संस्कृत पुरालेख, संस्कृत काव्य, धार्मिक, विशेष रूप से शैवागम एवं वैज्ञानिक साहित्य, और कर्नाटक के स्मारकों तथा हम्पी के विलक्षण स्थल के विशेष संदर्भ में भारतीय धार्मिक वास्तुकला और मूर्तिकला, और इंडोलॉजी का इतिहास। उन्होंने 23 पुस्तकें और लगभग 250 लेख प्रकाशित किए हैं।
- प्रो. फिल्योज को भारत में कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, जैसे महामहोपाध्याय की मानद उपाधि (2013 में लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ द्वारा दिया गया), 2014 में भारत के राष्ट्रपति से संस्कृत के लिए सम्मान प्रमाण पत्र, समविद्या इंस्टीट्यूट फॉर कल्चरल स्टडीज (पुणे) का मानद फेलो, वनमाली ट्रस्ट, मैसूर से संस्कृत के लिए वनमाली सम्मान। फ्रांस में उन्हें शेवेलियर दि ला लीजियन डी'होनर; शेवेलियर दि ल'ऑर्ड्रे नेशनल डु मेरिटे; कमांडर दि ल'ऑर्ड्रे डेस पाल्मेसेक एकेडेमिक्स पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।